बिजूका ही बन जायें...

आप सबने गाँव, उसके हरे-भरे खेत, और खेतों की पगडंडियों पर कभी चलकर देखा है? आपके तन को जब किसान के पसीने की कमाई से ऊपजी फसल की बालियाँ छूती हैं तो पूरा मन मनोहारी हो जाता है। साल के पूरे महीने दिन-रात टकटकी लगाये वो अपने अन्न के दाने की रक्षा करता है। और करता भी किससे है, जीव-जंतुओं से। उन जंतुओं में केवल जानवर ही शामिल नहीं हैं, मनुष्य भी उन्हीं की भांति उसको नुकसान पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ते। क्या फितरत हो गई है कि हम रक्षा करने के बजाय खुद ही खेत-खलिहान आदि को बरबाद करने में लग गये, और एक-दूसरे से ईर्ष्या के कारण परमार्थ करने से कतरा रहे हैं।

कोई भी किसान मनुष्य ही तो है ना! उसकी भी दिनचर्या है, उसके भी हरेक चीज़ का समय निश्चित है, वो पूरे दिन-पूरी रात तो देखभाल नहीं कर सकता ना। उसकी भी अपनी सीमाएँ हैं। इसलिए इसकी खानापूर्ति हेतु वो अपने ही जैसे एक निर्जीव मनुष्य जैसे प्रतीत होने वाला बिजूका बनाता है। जिसमें बाँस की डंडियों को एक साथ जोड़कर उसके हाथ बनाकर, उसके पैर और हाथ में धान का पुआल लगाकर उसको काले कपड़े पहनाकर सिर पर मिट्टी की हाँडी पर मुख, नाक और आँख बनाकर खेत के बीचो-बीच खड़ा करता है ताकि कोई भी जानवर जैसे ही खेत में घुसने की कोशिश करे

तो मनुष्य जैसा प्रतीत होने वाला प्रतीकी मनुष्य या बिजूका देखकर वो डर जाये कि कोई है जो हमें देख रहा है। अब आप सोचें कि जानवर एकाएक तो नहीं डरेगा ना। वो भी जाकर सूंघता है, अगर थोड़ी सरसराहट होती है तो वो भागता है। अब इतना कुछ कहने का भाव क्या हो सकता है, या इसके पीछे का मर्म क्या है?

वहाँ तो एक बाँस पर खड़ा पुतला एक खेत की रक्षा के निमित्त है। लेकिन आज हम मानवमात्र का व्यवहार शायद बिजूका से भी गया-गुज़रा है! अगर हमें कहीं पर एक पुतला बनकर खड़ा होने के लिए कहा जाए तो सबसे पहले हम अपना फायदा देखेंगे उसके बाद कार्य करने की सोचेंगे। अब जैसे ही हमारे मन में ऐसी भावना उत्पन्न होती है, अर्थात् कुछ सीखने के बजाय कुछ कमाने की हम सोचने लग जाते हैं तो आपका सारा ध्यान अपनी उन्नति से हटकर पैसे पर आ जाता है। वैसे भी कहा जाता है कि मनुष्य एक हाड़-मांस का पुतला है, उसके अंदर एक आत्मा जब प्रवेश करती है तब वो चलना-फिरना शुरु करता है, और उस आत्मा के अंदर सोचने समझने की क्षमता है, लेकिन जो वो सोचेगा वही तो उसको मिलेगा। आज हम सभी का ध्यान भौतिक देह, देह के सम्बन्ध, भौतिक वस्तुएँ, सम्पत्ति आदि को जुटाने पर है। लेकिन वो बिजूका तो निःस्वार्थ रूप से अपने स्वामी के खेत की रक्षा कर रहा है और बदले में कुछ मांग भी नहीं रहा। हम सभी को हर चीज़ के बदले कुछ चाहिए। यहाँ तक कि परमात्मा भी हमें विश्व का रक्षक बनाना चाहता है, और हम कहते हैं कि हमें इसके बदले क्या मिलेगा, तो

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

परमात्मा कहते कि आपको स्वर्ग की बादशाही मिलेगी, लेकिन पूरे विश्व की रक्षा निःस्वार्थ भाव से करनी होगी। अगर आपने इसमें थोड़ा भी लोभ या मोह के साथ कर्म किया तो ये आपके मालिक के साथ या परमात्मा के साथ धोखा होगा, और आज हम वही धोखा कर रहे हैं। परमात्मा हमें सबकुछ देना चाहता है, और कहता है कि सिर्फ आपको निमित्त बनकर बिजूके की भाँति खड़ा रहना है। लेकिन आज मानव की मत मारी गई है, वो न खुद पर विश्वास कर पा रहा है और ना खुदा पर। इसलिए माया रूपी जानवर आकर उसे कहीं न कहीं आहत करके चला जाता। जिस प्रकार किसान रोज़ जाकर अपने निमित्त रक्षक को देखता है कि कहीं टूटा तो नहीं। वैसे ही परमात्मा भी रोज़ अपने ज्ञान और योग के बल से हममें ताकत भरता है। लेकिन विश्वास हो तो ना हमें वो ताकत मिलेगी। तो क्यों न हम उस बिजूके से ही कुछ सीख लें।

आज हम सभी का ध्यान भौतिक देह, देह के सम्बन्ध, भौतिक वस्तुएँ, सम्पत्ति आदि को जुटाने पर है। लेकिन वो बिजूका तो निःस्वार्थ रूप से अपने स्वामी के खेत की रक्षा कर रहा है और बदले में कुछ मांग भी नहीं रहा। हम सभी को हर चीज़ के बदले कुछ चाहिए। यहाँ तक कि परमात्मा भी हमें विश्व का रक्षक बनाना चाहता है, और हम कहते हैं कि हमें इसके बदले क्या मिलेगा!

प्रश्न – मैं प्रोफेसर हूँ, हिन्दी पढ़ाता हूँ। आजकल एक बात देखकर काफी संकल्प चलते हैं कि सब जगह सत्य की हार हो रही है, असत्य विजयी हो रहा है, जबकि सत्यमेव जयते पुरातन उक्ति है। क्या सत्य की यों ही हार होती रहेगी? क्या सत्य को भगवान भी साथ नहीं देगा?

उत्तर – `असत्यमेव जयन्ती' के नारे से ही आज सबकुछ प्रभावी ढंग से चलता है। अधिकतर लोग इससे ही धनवान बनते हैं और पद व सम्मान पाते हैं। कलियुग के अन्त का ये भी तो प्रत्यक्ष प्रमाण है। सतयुग तो अब है नहीं जो सब कुछ सत्य हो। इसलिए वर्तमान युग की इस भयावहता को समझते हुए हमें इसे स्वीकार कर लेना चाहिए। इसे बदला नहीं जा सकता। हम केवल स्वयं को बदल सकते हैं।

सत्य की जीत होती ही है, परंतु हमें उसका इन्तज़ार करना पड़ता है। परन्तु वह इन्तज़ार कभी-कभी लम्बा हो जाता है और मनुष्य जीत के प्रति संशय बुद्धि हो जाता है। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि सत्य की हार भले ही हो, परंतु सत्य में शक्ति बहुत है। सत्य को परमसत्य परमात्मा साथ देते ही हैं, इसमें ज़रा भी संशय नहीं होना चाहिए। स्वयं भगवान ने कहा है कि जिधर सत्य है उधर मैं हूँ।

परन्तु हम परमात्म मदद के स्वरूप को नहीं पहचानते हैं। हम कुछ तत्काल मदद चाहते हैं और वे हमें दीर्घ कालीन मदद देते हैं। यदि सत्य के साथ हम सत्य स्थिति में भी रहें तो सत्य की हार नहीं होगी और यदि होगी भी तो आत्मा पर इसका असर नहीं आयेगा। इसलिए हमें ये भगवानुवाच नहीं भूलना चाहिए कि असत्य के काले बादल सत्य के सूर्य को ढ़क नहीं सकते। बादल बिखर जाएंगे व सत्य का सूर्य प्रकट हो जाएगा। सत्य की हार देख कर अपनी स्थिति नहीं बिगाड़ लेनी चाहिए। सत्य की जीत होगी।

प्रश्न – पवित्रता की स्थिति अति महत्वपूर्ण है, हम अपनी पवित्रता को बहुत बढ़ाना चाहते हैं, कुछ पावरफुल संकल्प व विधि हमें बताइये।

उत्तर – निःसन्देह, पवित्रता विश्व की सर्वश्रेष्ठ शक्ति है। परन्तु कलियुग के गन्दे माहौल में अनेक युवक बुरे संग में अपवित्रता का मार्ग अपना लेते हैं और आजकल की मेडिकल साइंस इसमें उन्हें साथ देती है। पवित्रता की शक्ति योगबल से ही बढ़ती है। अशरीरीपन का अभ्यास, स्वमान, ज्ञान-मुरली - ये ही सब साधन पवित्रता को बढ़ाने वाले हैं। हम कुछ प्रतिज्ञा के संकल्प लिख रहे हैं वो आपको मदद करेंगे। प्रतिदिन अमृतवेले अवश्य उठो और एकान्त में इस तरह स्वयं से बातें करो - मैंने भगवान को पवित्र रहने का वचन दे दिया है। वचन देकर मैं तोडूंगा नहीं। पवित्रता ही तो मेरा स्वधर्म है - इसी से तो सच्ची सुख शान्ति है - मुझे इस स्वधर्म को अपनाना है। पवित्रता अपनाना तो भगवान की आज्ञा है, मुझे इसकी पालना करनी है। मैंने एक बार जिस पथ पर कदम रख दिया अब मैं पीछे नहीं रहूंगा। मुझे तो पवित्र बनकर इस परमात्म-कार्य में सहयोग देना है। इस तरह के पॉज़ीटिव संकल्प करने से हमें परमात्म शक्ति प्राप्त होगी व ये मार्ग सरल हो जाएगा।

प्रश्न – बाबा कहते हैं कि बीजरूप स्थिति से ही पाप कटते हैं, फिर ये पाँच स्वरूपों का अभ्यास क्यों करना चाहिए? क्या फा-रेश्ते स्वरूप से भी पाप कटते हैं?

उत्तर – बीज रूप स्थिति से तीव्रता से पाप कटते हैं व अन्य स्थितियों से धीमी गति से पाप कटते हैं। आपने मुरली में सुना होगा कि स्वदर्शन चक्रधारी बनने से भी पापकर्म नष्ट हो जाते हैं। जब हम अपने देव स्वरूप में स्थित होंगे तो देव स्वरूप के सारे गुण व लक्षण जीवन में आ जाएंगे और देह भान भी कम होने लगेगा। ऐसे ही फरिश्ता स्वरूप व पूज्य स्वरूप के अभ्यास से पवित्रता बहुत बढ़ेगी व हल्कापन रहेगा, दातापन बढ़ेगा तथा जीवन में अनेक महानताएँ आयेंगी। लक्ष्य केवल विकर्म विनाश करना ही नहीं है बल्कि सर्व खज़ानों में सम्पन्न व स्थिति में सम्पूर्ण बनना है।

प्रश्न – मैं इंजीनियरिंग का विद्यार्थी हूँ तथा पढ़ाई पूरा मन लगाकर करता हूँ। मेरे मार्क्स भी 80 प्रतिशत से ज़्यादा आते हैं, परंतु मैं और ज़्यादा मार्क्स चाहता हूँ, परन्तु आते नहीं, क्या करूं?

उत्तर – परीक्षा से पूर्व दो अभ्यास प्रारम्भ कर दो - मैं मास्टर सर्व शक्तिवान हूँ और सफलता मेरा जन्म सिद्ध अधिकार है। हर पेपर से पूर्व भी यही अभ्यास करो इससे आपकी कामना पूर्ण होगी। अभ्यास सारे दिन में पच्चीस बार करें।

रोज़ उठते ही अपने अन्तर्मन को एक वीज़न दे दो कि परीक्षा के बाद रिज़ल्ट आउट हो गया है, मार्कशीट मेरे हाथ में है और उसमें 85 प्रतिशत मार्क्स हैं। ऐसा सात दिन तक करो। ऐसा करने से अन्तर्मन की शक्ति आपको मन इच्छित लक्ष्य दिलायेगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

उपलब्ध पुस्तकें

Peace of Mind
For Cable & DTH +91 8104777111
TATA SKY 192 airtel digital TV 686 VIDEOCON d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E

DD डायरेक्ट फ्री दूरदर्शन DTH पर GOD TV में और DISH TV पर भी फ्री पीस ऑफ माइंड चैनल शाम 7.30 से रात्रि 10.00 बजे तक देख सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें... 8104-777111/9414151111